पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति
प्रकाशन एवं बहुउद्देशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

शब्द
से संवेदना तक...
लेखन से
परिवर्तन तक...

हिन्दी
हमारी पहचान
हमारी शक्ति

'समसामयिक प्रश्नों पर आपकी कलम'

(लेख प्रतियोगिता)

विचार...
चिंतन...
संवाद...
और
एक बेहतर
कल की ओर...

समाज
विकास
शिक्षा
पर्यावरण
युवा
मूल्य
राजनीति
महिला
संस्कृति
समाधान

समाज
साहित्य
संस्कृति
विकास
नई पीढ़ी
बेहतर कल

विचारों की
स्याही से
बदलता समाज...

रचनाकार :-
किरण मोर

आयोजक:-
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी (म.प्र.)

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति

प्रकाशन एवं बहुददेशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

हिन्दी
हमारी पहचान
हमारी शक्ति

शब्द से संवेदन तक...
लेखन से परिवर्तन तक...

Antrashabdshaktiprakashan

संपादक	:	डॉ. प्रीति समकित सुराना
अवरण चित्र	:	डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी सम्पादक	:	Webcoodee.com
मुख्य कार्यालय	:	15 नेहरू चौक, बारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
संपर्क	:	9009423393
ईमेल	:	antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाइट	:	www.antrashabdshakti.com

वैधानिक सूचना

पुस्तक में प्रकाशित सभी रचनाएँ संबंधित रचनाकारों की मौलिक अभिव्यक्तियाँ हैं। प्रत्येक रचना में व्यक्त विचार, कथ्य एवं अभिमत के लिए संबंधित रचनाकार स्वयं उतरदायी हैं। रचनाओं के चयन एवं प्रकाशन का उद्देश्य साहित्यिक अभिव्यक्ति को मंच प्रदान करना एवं हिन्दी लेखन को प्रोत्साहित करना हैं।

हिन्दी
से ही है
पहचान...

विचार...
संवाद...
समाज...
और एक बैहतर कल...

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन, बारासिवनी (म.प्र.)

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

लेख प्रतियोगिता

लेखक/लेखिका - किरण मोर

लिंग भेद का निर्माण क्यों?

लिंग भेद का निर्माण क्यों?

जिस काम के लिए मनुष्य की रचना भगवान ने की थी,और सृष्टि संचालन की व्यवस्था के तहत लिंग भेद निर्माण किया गया था,क्योंकि प्रजनन के तहत ये निर्माण आवश्यक था,और देह रचना के आधार पर स्त्री-पुरुष को पृथक गुणों से अवशोषित किया गया था,जैसे घर और बाहर/ताकत और कोमल/ इनमें से ममता,करुणा,सहनशीलता,स्त्री के गुणों में और ताकत के साथ सोच की दृष्टिकोण से पुरुष को बाहरी दुनिया के लिए चुना गया,लेकिन अब सवाल आता है तो फिर इसमें यानि ईश्वर के द्वारा की गई रचना में भी कमी थी क्या? जवाब है बिल्कुल नहीं!!ईश्वर ने जिस गूढ़ता से और जिस मकसद से नर-नारी की रचना की,उसकी नींव को छोड़कर अपने आधार स्तंभ की रचना मनुष्य ने अपनी सुविधानुसार खड़ी कर ली,उनके अर्थ बदल दिए,अपने अहम का समावेश कर उसकी व्यवस्था को नकार कर अपनी नई व्यवस्था बनाई,अपने को ताकतवर औरत को कमजोर बताया,जबकि हर दृष्टिकोण से हर मामले में स्त्री-पुरुष से बराबर से भी आगे निकलने की क्षमता वाली साबित हुई है हमेशा जो शायद उनकी पौरुषता पर चोट थी,शायद यहीं से शुरुआत हुई, पुरुषत्व के अंहकार की और उसके चलते धीरे-धीरे मनुष्य में भेद होकर वह स्त्री-पुरुष में बदल गया,सिर्फ दैहिक संरचना के आधार पर, फिर उसे शोषिता बनाकर उसका शुरु हुआ शोषण,वो भी मानसिक आर्थिक,शारीरिक हर तरह से,यहाँ तक की स्वयं की भूख की पूर्ति का साधन बनाकर रख दिया गया उसे किसी वस्तु की तरह,और अपने बचाव में जब वह लड़ने को उद्दत हुई तो उसकी स्त्री होने की गरिमा पर ही वार होने लगे,यानि हर तरह से प्रताड़ित कर जुल्म की पराकष्ठा को पार किया गया ,उसकी सहने की क्षमता जब समाप्त होने लगी और फिर उसने अपना रास्ता पृथक करने के कोशिश की तो सैकड़ों लांछनों से सुशोभित कर उसे तोड़ने की कोशिश की गई,वह तो समर्पित थी लेकिन पुरुष का दंभ उसे अबला समझने लगा था।

और सहते-सहते जब नारी ने अपने लिए आर्थिक आजादी चुनी तो उसमें हिस्सेदार बनने के नियम बन गए!! यानि कैद हमेशा बरकरार रहे इसके लिए साम,दाम दंड, भेद सब अपनाया गया,नारी ने सबकुछ सहा और यहाँ ऐसा नहीं है नारी ने कभी सहयोग नहीं किया,

उसकी सहनशक्ति ही उसका सहयोग थी,लेकिन दर्द उसे भी होता है,वो भी मनुष्य है,ये कितनों ने कभी समझा,पुराने समय तो फिर भी ठीक था,लेकिन आज उसने अगर अपने लिए कदम बढ़ाया तो उसके लिए नये नियम की जंजीर पहले ही तैयार कर ली गई, इस तरह अगर कुछ भी उसने करने की कोशिश की उसे सहयोग करने की बजाय गलत ठहराकर दबा दिया गया,क्योंकि समाज को बोलने वाली स्त्री पसंद ही नहीं है,उसे चुपचाप सुनकर हाँ में हाँ मिलाने वाली स्त्री अच्छी लगती है आज भी,समय बदला है लेकिन नारी की दशा नहीं बदली,और नारी ने बदलने की कोशिश की तो बवाल मच रहा है,उसके अधिकारों की कोई कीमत नहीं समझी गई, आज का पढ़ा लिखा एजुकेटेड पुरुष तो और भी ज्यादा कर रहा है,जबकि वह नये विचारों का दुनिया को देखा हुआ मार्डन जमाने का पुरुष है,फिर भी,क्यों? कभी किसी स्त्री के विषय में बात नहीं की गई, तो,

इसलिए स्त्री को ना चाहते हुए दहलीज पार करना पड़ रहा है,अपने लिए खुद सोचना पड़ेगा,खुद निर्णय लेना पड़ रहा है,जब साथी ही साथ न दे,तब स्त्री क्या करे?सब एक जैसी नहीं हैं! हाँ कुछ अपवाद हो सकते,जो गलत उनको गलत ही कहा जाए गा,और उनका निवारण जरूरी भी है!

लेकिन सबको एक ही कटघरे में खड़ा नहीं किया जा सकता।

- किरण मोर

लेखक परिचय

नाम – किरण मोर

निवास - कटनी.म.प्र.

अन्तरा शब्दशक्ति
प्रकाशन

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

सम्मान-पत्र

यह प्रमाणित किया जाता है कि

आ.....**किरण मोर**.....जी

ने हिन्दी पखवाड़े के अवसर पर आयोजित "**एक लेख प्रतियोगिता**" में उत्साहपूर्वक सहभागिता करते हुए **समसामयिक विषय पर अपने विचारों को** प्रभावी एवं सार्थक ढंग से अभिव्यक्त किया।

उनकी साहित्यिक **अभिव्यक्ति** एवं रचनात्मक सहभागिता की सराहना करते हुए **अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन** की ओर से यह **सम्मान-पत्र** सादर प्रदान किया जाता है।

आपकी सृजनशीलता एवं साहित्यिक यात्रा के उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएँ।

हिन्दी विचारों को विस्तार देती है... समाज को जोड़ती है...

हिंदी
हमारी पहचान...
हमारी शक्ति...

प्रीति सुराना
समकित सुराना

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन एवं संस्था
डॉ. प्रीति समकित सुराना

शब्द से संवेदन तक... लेखन से परिवर्तन तक...